اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा

सारे गुनाह मुआ़फ़ हों

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह गुनाहों से ऐसे ही पाक हो जाता है जैसे पैदाइश के दिन था।

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فى غسل الميت، ٢/٢٠١، حديث ١٤٦٢)

तजहीज़ो तक्फ़ीन के अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ 4 मदनी फूल

﴿1﴾ मय्यित को नहलाना फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ लोगों ने ग़ुस्ल दे दिया तो सब से साक़ित हो गया (या'नी सब की त़रफ़ से अदा हो गया)। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/810) ﴿2﴾ मय्यित को कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/817) ﴿3﴾ नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है कि एक ने भी पढ़ ली तो सब बरियुज़्ज़िम्मा हो गए वरना जिस जिस को ख़बर पहुंची थी और न पढ़ी गुनहगार हुवा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/825) ﴿4﴾ मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और येह जाइज़ नहीं कि मय्यित को ज़मीन पर रख दें और चारों त़रफ़ से दीवारें क़ाइम कर के बन्द कर दें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1/842)

रूह क़ब्ज़ होने के बा'द इन 6 मदनी फूलों के मुताबिक़ अमल कीजिये

﴾1﴿ मौत वाक़ेअ होते ही मय्यित की आंखें बन्द कर दीजिये। ﴾2﴿ एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिरह दे दें कि मुंह खुला न रहे ﴾3﴿ चेहरा क़िब्ला रुख़ कर दीजिये ﴾4﴿ मय्यित की उंगलियां और हाथ पाउं सीधे कर दीजिये ﴾5﴿ दोनों पाउं के अंगूठे मिला कर नर्मी से बांध दें ﴾6﴿ मय्यित के पेट पर मुनासिब वज़्न की कोई चीज़ (मसलन रज़ाई या कम्बल वग़ैरा हस्बे ज़रूरत तह कर के) रख दें ताकि पेट फूल न जाए।

ग़ुस्ल व कफ़न की तय्यारी के मदनी फूल

❁ पानी गर्म करने का इन्तिज़ाम रखिये और मज़ीद इन चीज़ों का इन्तिज़ाम कर लीजिये ! ﴾1﴿ ग़ुस्ल का तख़्ता ﴾2﴿ अगर बत्ती ﴾3﴿ माचिस ﴾4﴿ दो मोटी चादरें (कथ्थई हों तो बेहतर है) ﴾5﴿ रूई ﴾6﴿ बड़े रूमाल की तरह के दो कपड़ों के पीस (इस्तिन्जा वग़ैरा के लिये) ﴾7﴿ दो बाल्टियां ﴾8﴿ दो मग ﴾9﴿ साबुन ﴾10﴿ बैरी के पत्ते ﴾11﴿ दो तोलिये ﴾12﴿ बिग़ैर सिला कफ़न (पौने दो गज़ चौड़ाई का 7 मीटर कपड़ा) ﴾13﴿ कैंची ﴾14﴿ सूई धागा ﴾15﴿ काफ़ूर ﴾16﴿ ख़ुश्बू। (अपने पहुंचने का अन्दाज़न वक़्त भी बता दीजिये)।

ग़ुस्ले मय्यित के 7 मराहिल

﴾1﴿ इस्तिन्जा कराना (इस्तिन्जा करवाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट ले) ﴾2﴿ वुज़ू कराना (इस में कुल्ली और नाक में पानी डालना नहीं लिहाज़ा रूई भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों, और नथनों पर फेरें फिर 3 बार चेहरा और 3 बार कोहनियों समेत दोनों हाथ धुलाएं, एबार पूरे सर का मस्ह करें और 3 बार पाउं धुलाएं) ﴾3﴿ दाढ़ी और सर के बाल धोना ﴾4﴿ मय्यित को उल्टी करवट पर लिटा कर सीधी करवट धोना ﴾5﴿ मय्यित को सीधी करवट पर लिटा कर उल्टी करवट धोना ﴾6﴿ पीठ से सहारा देते हुवे बिठा कर नर्मी से पेट के निचले हिस्से पर हाथ फेरना (सत्र के मक़ाम पर न नज़र कर सकते हैं न बिग़ैर कपड़े के छू सकते हैं) ﴾7﴿ सर से पाउं तक काफ़ूर का पानी बहाना (काफ़ूर मिले पानी का एक मग काफ़ी है)।

कफ़न काटने के 7 मराहिल

﴾1﴿ कफ़न के लिये तक़रीबन पोने दो गज़ चौड़ाई का, सात मीटर कपड़ा लीजिये ﴾2﴿ एक कपड़ा मय्यित के क़द से इतना ज़ियादा काटिये कि लपेटने के बा'द सर और पाउं की त़रफ़ से बांधा जा सके (इसे लिफ़ाफ़ा कहते हैं) ﴾3﴿ दूसरा कपड़ा मय्यित के क़द बराबर काटिये (इसे इज़ार या तहबन्द कहते हैं) ﴾4﴿ क़मीज़ के लिये कपड़े को मय्यित की गर्दन से घुटनों के नीचे तक नापिये और अब इसे डबल (दोहरा) कर के काटिये ताकि आगे और पीछे की जानिब लम्बाई (Length) एक हो और चौड़ाई (Widht) दोनों कन्धों के बराबर रखिये, इस में चाक और आस्तीनें नहीं होतीं ﴾5﴿ मर्द की क़मीज़ (कफ़नी) में गला बनाने के लिये दरमियान से, कन्धों की जानिब

और औ़रत की क़मीज़ के लिये सीने की जानिब इतना चीरा (Cut) लगाइये कि क़मीज़ पहनाते वक़्त गर्दन से बा आसानी गुज़र जाए (मर्द के लिये कफ़ने सुन्नत में येही तीन कपड़े हैं जब कि औ़रत के लिये दो कपड़े और हैं, सीनाबन्द और ओढ़नी) ﴾6﴿ सीनाबन्द के लिये कपड़े की लम्बाई सीने से रान तक रखिये ﴾7﴿ ओढ़नी के लिये कपड़ा लम्बाई (Length) में इतना काटिये कि आधी पुश्त (या'नी कमर) के नीचे से बिछा कर सर से लाते हुवे चेहरा ढांप कर सीने तक आ जाए और चौड़ाई (Widht) एक कान की लौ (Earlobe) से दूसरे कान की लौ तक हो (येह उ़मूमन डेढ़ गज़ (1.50 Yard) होती है इसे क़मीज़ की चौड़ाई से बचने वाले कपड़े से बनाया जा सकता है)।

कफ़न पहनाने के 9 मराहिल

﴾1﴿ कफ़न को धूनी देना ﴾2﴿ कफ़न बांधने के लिये धज्जियां रखना ﴾3﴿ कफ़न बिछाना (सब से पहले लिफ़ाफ़ा (बड़ी चादर) फिर इज़ार (छोटी चादर) फिर क़मीज़ बिछाना, औ़रत के कफ़न में सब से पहले सीनाबन्द फिर लिफ़ाफ़ा फिर इज़ार फिर ओढ़नी और फिर क़मीज़) ﴾4﴿ मय्यित को कफ़न पर रखना (नर्मी से रखिये, अब भी बे सत्री न होने पाए) ﴾5﴿ शहादत की उंगली से सीने पर पहला कलिमा, दिल पर या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) लिखना, याद रहे कि येह लिखना रौशनाई से न हो ﴾6﴿ क़मीज़ पहनाना और पेशानी पर शहादत की उंगली से بِسْمِ اللّٰه लिखना ﴾7﴿ नाफ व सीने के दरमियानी हिस्सए कफन पर मशाइख़ के नाम लिखना (औ़रत को क़मीज़

पहना कर उस के बाल दो हिस्से कर के सीने पर डलना फिर ओढ़नी पहनाना) ﴾8﴿ आ'ज़ाए सुजूद (या'नी जिन आ'ज़ा पर सज्दा किया जाता है उन) पर क़फ़ूर लगाना ﴾9﴿ लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर पहले उल्टी त़रफ़ से फिर सीधी त़रफ़ से लपेटना (औ़रत के कफ़न में बड़ी चादर के बा'द सीनाबन्द पहले उल्टी त़रफ़ से फिर सीधी त़रफ़ से लपेटना)।

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

मर्हूम (मर्हूमा) के अ़ज़ीज़ व अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं ! मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ तलफ़ी की हो, या आप के मक़रूज़ हों, तो इन को रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासिते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुआ़ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के।" अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं। जब इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहते हुवे फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढ़िये। सना में "وَتَعَالٰى جَدُّكَ" के बा'द "وَ جَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ" का इज़ाफ़ा कीजिये, दूसरी बार इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहिये, फिर नमाज़ वाला दुरूदे इब्राहीम पढ़िये, तीसरी बार इमाम साह़िब "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ पढ़िये, (अगर नाबालिग़ या नाबालिग़ा का

जनाज़ा हो तो इस की दुआ पढ़ने का ए'लान कीजिये) जब चौथी बार इमाम साहिब "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें तो आप "اَللّٰہُ اَکْبَر" कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साहिब के साथ क़ाइदे के मुताबिक़ सलाम फेर दीजिये। (नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा, स. 19)

तदफ़ीन के 17 मराहिल

﴿1﴾ क़ब्रिस्तान में दफ़्न के लिये ऐसी जगह लेना जहां पहले क़ब्र न हो ﴿2﴾ क़ब्र की लम्बाई मय्यित के क़द से कुछ ज़ियादा, चौड़ाई आधे क़द और गहराई कम से कम निस्फ़ क़द की हो और बेहतर येह कि गहराई भी क़द बराबर रखी जाए ﴿3﴾ क़ब्र में ईंटों की दीवार बनी हो तो मय्यित लाने से पहले क़ब्र और सलीबों का अन्दरूनी हिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी तरह लीपना ﴿4﴾ चेहरे के सामने दीवारे क़िब्ला में ताक़ बना कर अहद नामा, शजरा शरीफ़ वग़ैरा तबर्रुकात रखना ﴿5﴾ अन्दरूनी तख़्तों पर यासीन शरीफ़, सूरतुल मुल्क और दुरूदे ताज पढ़ कर दम करना ﴿6﴾ मय्यित को क़िब्ले की जानिब से क़ब्र में उतारना ﴿7﴾ औरत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखना ﴿8﴾ क़ब्र में उतारते वक़्त येह दुआ पढ़ना : بِسْمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ وَعَلٰی مِلَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﴿9﴾ मय्यित को सीधी करवट लिटाना या मुंह क़िब्ले की तरफ़ करना और कफ़न की बन्दिश खोल देना (मय्यित लाने से पहले ही क़ब्र में नर्म मिट्टी या रेते का तक्या सा बना लें और उस पर टेक लगा कर मय्यित को सीधी करवट लिटाएं येह न हो सके

तो चेहरा बा आसानी जितना हो सके क़िब्ला रुख़ कर दें) ﴿10﴾ बा'दे दफ़्न सिरहाने की त़रफ़ से तीन बार मिट्टी डालना पहली बार مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ , दूसरी बार وَمِنۡهَا نُخۡرِجُكُمۡ تَارَةً اُخۡرٰى और तीसरी बार وَفِيۡهَا نُعِيۡدُكُمۡ कहना ﴿11﴾ क़ब्र ऊंट के कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाना और ऊंचाई एक बालिश्त या कुछ ज़ियादा रखना ﴿12﴾ बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़कना ﴿13﴾ क़ब्र पर फूल डालना कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा ﴿14﴾ दफ़्न के बा'द सिरहाने सूरए बक़रह की शुरूअ़ की आयात الٓمّٓ से مُفۡلِحُوۡنَ तक और क़दमों की त़रफ़ आख़िरी रुकूअ़ की आयात اٰمَنَ الرَّسُوۡلُ से ख़त्म सूरह तक पढ़ना ﴿15﴾ तल्क़ीन करना : क़ब्र के सिरहाने खड़े हो कर तीन मरतबा यूं कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! (मसलन या फ़ारूक़ बिन आमेना ! अगर मां का नाम मा'लूम न हो तो इस की जगह ह़ज़रते ह़व्वा का नाम ले) फिर येह कहे :

اُذۡكُرۡ مَا خَرَجۡتَ عَلَيۡهِ مِنَ الدُّنۡيَا شَهَادَةَ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَ رَسُوۡلُهٗ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) وَاَنَّكَ رَضِيۡتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَ بِالۡاِسۡلَامِ دِيۡنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَّبِالۡقُرۡاٰنِ اِمَامًا.

﴿16﴾ दुआ़ व ईसाले सवाब करना ﴿17﴾ क़ब्र के सिरहाने क़िब्ला रू खड़े हो कर अज़ान देना। कि अज़ान की बरकत से मय्यित को शैत़ान के शर से पनाह मिलती है, अज़ान से रह़मत नाज़िल होती, मय्यित का ग़म ख़त्म होता, इस की घबराहट दूर होती, आग का अ़ज़ाब टलता और अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात मिलती है नीज़ मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद आ जाते हैं।

तिलावत से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब कुरआने करीम की सूरतें पढ़ी जाएंगी इन्हें कान लगा कर ख़ूब तवज्जोह से सुनिये, फिर अज़ान दी जाएगी, इस का जवाब दीजिये। फिर दुआ मांगी जाएगी। मर्हूम (मर्हूमा) की क़ब्र की पहली रात है, येह सख़्त आज़माइश की घड़ी होती है, मर्दूद शैतान क़ब्र में बहकाने की कोशिश करता है, जब मय्यित से सुवाल होता है : مَنْ رَّبُّکَ؟ या'नी तेरा रब कौन है ? तो शैतान अपनी त़रफ़ इशारा कर के कहता है कि कह दे : "येह मेरा रब है।" ऐसे मौक़अ़ पर अज़ान मय्यित के लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श होती है क्यूंकि अज़ान की बरकत से मय्यित को शैतान के शर से पनाह मिलती है, अज़ान से रह़मत नाज़िल होती, मय्यित का ग़म ख़त्म होता, इस की घबराहट दूर होती, आग का अ़ज़ाब टलता और अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात मिलती है नीज़ मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद आ जाते हैं।

मदीना : ग़ुस्ल व कफ़न वग़ैरा का त़रीक़ा सीखने के लिये येह कार्ड ना काफ़ी है। तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "तजहीज़ो तक्फ़ीन का त़रीक़ा" पढ़ लीजिये और तरबिय्यत के लिये "मजलिसे तजहीज़ो तक्फ़ीन (दा'वते इस्लामी)" से राबित़ा फ़रमाइये।